हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादन

डॉ. एस. प्रीति • डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
डॉ. एस. प्रीति, डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

ISBN 978-93-92703-99-7
₹ 600
सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक

डॉ. एस. प्रीति ☼ डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मों. सहिदुल इस्लाम

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना पुस्तक या इसके किसी अंश को संक्षिप्त या परिवर्धित कर प्रकाशित करना, फिल्म बनाना कानूनन अपराध है।

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISBN : 978-93-92703-99-7

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024
प्रकाशक :
सृजनलोक प्रकाशन
बी-1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली - 110062
मोबाइल : 7654926060
ईमेल : srijanlok@gmail.com
आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस
मुद्रक : बी.क्यू.एस. सर्विसेज, खानपुर नई दिल्ली - 62

Hindi Sahitya Me VIvidh Vimarsh
Edited By : Dr. S. Preeti, Dr. S. Razia Begum, Dr. Md. Sahidul Islam
Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

₹ 600

26. डॉ. एस. विजया	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	149
27. रेखा शर्मा	सामजिक संरचना में परिवर्तनकारी भूमिका के वाहक हिंदी कहानियों के स्त्री पात्र	154
28. गीतु एम	'पिता' कहानी में वृद्ध विमर्श का मार्मिक उद्वेग	161
29. प्रिनसी पी ए.	नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'हरी बिंदी' कहानी	164
30. एस. जानकी	श्यामलाल राही कृत 'टेसू के फूल' उपन्यास में दलित विमर्श	170
31. नम्रता कुमारी	उषाकिरण खान की कहानियों में पर्यावरण	178
32. रबोम बेलो	'स्त्री की पहचान और अस्तित्व का प्रश्न 'भया कबीर उदास' और 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास के सन्दर्भ में	184
33. सची नायक	नर्मदेश्वर की कहानियों में आदिवासी	190
34. इ. जाक्कुलिन डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	हिन्दी साहित्य में पारिवारिक विमर्श : मालती जोशी की कहानियों संदर्भ में	196
35. पुरी गोदावरी	'गोबर गणेश' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन का यथार्थ	201
36. साईमीरा जोशी	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	205
37. रेखा कुमारी (शोधार्थी)	तेजेंदर शर्मा की कहानियो में प्रवासी साहित्य के विविध आयाम	211
38. रेणुका देवी	मध्यकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री	216
39. वि अमुधा डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति	225
40. वेंकट शिल्पा काकि डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	हिन्दी बाल कहानी साहित्य में बाल विमर्श	229
41. कु. उल्का कालेकर	किन्नर विमर्श	234
42. राखी	नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री स्वाधीनता का स्वरूप	240
43. देवा बासफोर	लता अग्रवाल की कहानियों में किन्नर समाज की अभिव्यक्ति	244
44. अरुण कुमार	कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन की समस्यायें	250
45. डॉ. रंजना राय	रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों में स्त्री विमर्श	254
46. कनकलता श्रीवास्तव	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में अभिव्यक्त परिवार के विविध प्रकार	262
47. महेश्वर	डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में 'दलित विमर्श'	267

हिन्दी साहित्य में पारिवारिक विमर्श : मालती जोशी की कहानियों संदर्भ में

E. Jacqueline,
Research Scholar, Department of Hindi, VISTAS
2/47, Anthoni pillai Street, Gandhi Nagar,
East Tambaram, Chennai – 600059
Mobile No- 9841777187

Dr. Anuradha Pakalapati
Asst. Prof. & Research Supervisor
Dept. of Hindi, School of Laguage
Vels institute of Science, Technology and Advance Studies
Mob.- 7299012063

सारांश

कहा जाता है परिवार में ही हर मनुष्य को बुनियादी शिक्षा मिलता है यह निर्विवादित सच है। मनुष्य के जन्म से लेकर अंत तक आश्रय देने वाले एक ही संस्था परिवार है। इसके अलावा और किसी को कह नहीं सकते। मनुष्य को बिना किसी नियमों के बांधने वाला एक मात्र संरचना परिवार ही है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमानकाल तक इस संस्था स्वरूप में समय के साथ–साथ परिवर्तन पाया जाता है यह स्वाभिक भी है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, तकनीकी आधुनिकीकरण, पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव, यातायात की उपलब्धता, जनसंख्या वृद्धी, बदलती वैवाहिक धारणाएँ आदि इस परिवर्तित स्वरूप का केंद्र बन जाता है। पहले–पहल संयुक्त परिवार के स्वरूप आम तौर पर गाँव में ज्यादातर पाया जाता था परंतु अभी गाँव में भी संयुक्त परिवार का अभाव है। अभी इसका आकरण संकीर्ण होकर एक व्यक्ति परिवार बन रहा है। इस परिवर्तित परिस्थितियों को देशकाल के अनुरूप कई साहित्यिक रचनाऔं में देखने मिलता है। समाज और परिवार का असर साहित्य में भी पाया जाता है। इसलिए कहा जाता है साहित्य समाज का दर्पण। साठोत्तरी हिन्दी महिला कहानीकारों में मालती जोशी जी की अधिकतर कहानियां परिवार व परिवार से संबंधित सिलसिले पर केंद्रित हैं।

मूल शब्द : समाज, परिवर्तन, परिस्थिति, संरचना, गतिविधियाँ, संगठन, स्वरूप, परिवेश

प्रस्तावना

व्यक्ति के लिए परिवार महत्त्वपूर्ण संस्था है जहाँ उनको स्नेह, विश्नास, संरक्षण, सुखमय जीवन, शान्तिपूर्ण दाम्पत्य जीवन, आश्रय मिलता है। व्यक्ति शालीनता, अनुशासन परिवार के बुजुर्ग से अनुकरण करते है। समाज में परिवार का महत्तव माता–पिता के व्यवहार का प्रभाव, भाई–बहनों के रिश्ते, माता–पिता के चरित्र का प्रभाव, परिवार की आर्थिक स्थिति आदि से समझा जा सकता है। परिवार के स्वरूप को सदस्यों की संख्या, विवाह के स्वरूप, पारिवारिक सत्ता या अधिकार वंश और निवास, भौगोलिक स्थिति, जातीय और आर्थिक स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। आदिकाल से लेकर वर्तमानकाल तक मानव सभ्यता के विकास में विवाह, दाम्पत्य, संयुक्त परिवार, विविध पारिवारिक संबंध आदि महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले परिवार के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। कहा जाता है सर्वभौमिकता, भावनात्मक आधार, निर्माणात्मक प्रभाव, सीमित आकार, सामाजिक ढांचे में प्रमुख स्थिति, सदस्यों का उत्तरदायित्व, सामाजिक नियम, स्थाई व अस्थाई प्रगति आदि परिवार की विशिष्ट लक्ष्ण और विशेषताएँ हैं। विद्वानों के मतानुसार पुत्र प्राप्ति, धर्माचरण, दाम्पत्य जीवन ये तीनों परिवार का मुख्य प्रयोजन के रूप में बाँटा गया है। विकसित परिवार के स्वरूप में पति–पत्नी, बेटा–बेटी, दादा–दादी, नाना–नानी, चाचा–चाची, मौसा–मौसी, मामा–मामी, बुआ–फूफा, जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी भतीजा–भतीजी, पोता–पोती आदि परिवार के अंग होते हैं। परिवार के सदस्यों को जीवनभर स्नेहसूत्र में बाँधे रखते हैं।

मालती जोशी की कहानियों में परिवार

मालती जोशी की कहानियों में अधिकतर कहानियां परिवार एवं परिवार से संबंधित सिलसिले आधारित हैं। वास्तव में परिवार, संयुक्त परिवार व केंद्रीय परिवार नामक दो रूप में बांटा जाता है। इस केंद्रीय परिवार के अंर्तगत उच्चवर्गीय केंद्रीय परिवार व मध्यवर्गीय केंद्रीय परिवार में वर्गीकृत किया गया है। मालती जोशी जी की कहानी का केंद्रबिंदु मध्यवर्गीय केंद्रीय परिवार और उससे समबन्धित सिलसिले मात्र ही है। मालती जोशी की कहानियों में भी एकल परिवार, संयुक्त परिवार, ग्रामीण परिवार, नगरीय परिवार, महानगरीय परिवार आदि का झलक मिलता है।

मालती जोशी की कहानियों में संयुक्त परिवार

संयुक्त परिवार अधिकांशतः गाँव में देखने को मिलता है। भारतीय समाज के संदर्भ में अधिकतर लोग परंपरागत रूप में खेती–बाडी करते थे। ज्यादातर भारतीय भूभागों को कृषक लोग कृषि के लिए

उपयोग करते थे। उस समय के पीढी को किसी और धंधे का जानकारी नहीं होने के कारण परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर खेती–बाडी करते थे। अन्य लोग अपने–अपने परंपरागत धंधे को संभालते थे। घर के बुजुर्ग परिवार का संचालन करते हैं। घर के सदस्यों के खाना व्यवस्था, घर के सदस्यों के जरूरतों की पूर्ति भी एक साथ करते थे। घर के कई समारोह, धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों को घर के सभी सदस्य एक साथ मिल–जुलकर मनाया जाता था। घर के सभी सदस्यों के बीच आपस में घनिष्टता पाया जाता है। संयुक्त परिवार के वातावरण में परिवार वालें सुरक्षित परिस्थिति को महसूस करते हैं। ड़ॉ. आई.पी. देसाई ने संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए कहा "हम उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं जिसमें मूल परिवार से अधिक पीढियों के सदस्य सम्मिलित हो तथा उनके सदस्य एक–दूसरे से सम्पत्ति, आय तथा पारस्परिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के द्वारा सम्बन्धित हैं।1" इसका आधार मालती जोशी की कहानी 'महकते रिश्ते' में डॉक्टर जयश्री बुंदेला के बच्पन से ताऊ–ताई के परिवार और उसके पिताजी परिवार एक साथ रहता है। दोनों परिवार की घनिष्ठता को डॉक्टर जयश्री बुंदेला व्यक्त किया कि "माँ और बड़ी माँ को मैंने कभी झगड़ते नहीं देखा। पर कभी साथ बैठकर खाते या गप्पें लड़ाते भी नहीं देखा। दादी की सेवाटहल के बहाने इन लोगों ने भी अपना काम, अपना समय बाँट लिया था। घर में कभी कोई हंगामा नहीं होता था। इसलिए नौकरों–चाकरों को, पास–पडोसियों को बड़ी असुविधा भी होती थी।2"

मालती जोशी की कहानियों में एकल परिवार

वर्तमान समय में आम तौर पर पाया जाने वाले परिवार एकल या एकाकी परिवार है। लोगों की पढ़ाई, आर्थिक वृद्धि, ज्ञान वृद्धी, शहरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकी तरक्की, यातायात तरक्की आदि के फलस्वरूप संयुक्त परिवार अपने आकरण में संकीर्ण होकर एकल परिवार का नया रूप धारण लिया है। इस तरह पारिवारिक स्वरूप में पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे रहते है। एकल परिवार में संयुक्त परिवार के सभी नियमों का पालन से मुक्त रहते हैं। संयुक्त परिवार के सदस्यों के रिश्तों में दरार या समस्या आ जाता है तो घर के मुखिया संभालकर कर सुलझाव देते हैं पर एकल परिवार में इसका अभाव होता है। यदि एकल परिवार में माता–पिता के बच्चों को डांटते हैं तो असहनीय बच्चे घर से बाहर निकल कर भटक जाते हैं। यदि बच्चें काम की वजह से विदेश जाते हैं तो माता–पिता घर में अकेला रहना पड़ता है। इसका जिक्र

मालती जोशी की 'प्रलय के बावजूद' कहानी में आभा–आलोक के विवाह होने के बाद विदेश जाते हैं। दोनों के माता–पिता अकेले रहते हैं। आभा के माता–पिता को सालगिरह की बधाइयाँ देने के लिए आते समय आलोक की माँ अपने आप सोचती हैं कि "...सच है, बच्चे साथ नहीं होते तो सब कुछ फीका लगने लगता है। जब से आलोक बाहर गया है, वे तो पग–पग पर इस बात को अनुभव कर रही हैं, बल्कि अब तो आदत हो गई है। चाहे बेटे के माँ–बाप हों या बेटी के – बुढ़ापा सबको अकेले ही काटना है। नए ज़माने की यही सौगात है।3"

मालती जोशी की कहानियों में ग्रामीन परिवार

ग्रामीन लोग बहुत सीधे–साधे रहते हैं दिल खोल कर बात करते हैं। ग्रामीन वातावरण बहुत समृद्ध और हरियीली होने के कारण मन को शांति मिलता है। ग्रामीन परिवार के लोग आपस में स्नेह के साथ मिल–जुल कर जीवन बिताते हैं। परिवार के सभी कामों को आपस में बांटकर एक–दूसरे का सहयोग देते हैं। ग्रामीन परिवार के लोग धर्मिक रस्मों और संस्कृतियों को क्रमशः पालन करते हैं। अपने सख–दुःख को परिवार वाले एक–दूसरे से साँझा करते हैं। इसका झलक मालती जोशी की कहानी 'साँझ की बेला, पंछी अकेला' में कुमार साहब अपनी माँ और गाँव के बारे में इस तरह सोचते हैं कि "औरों के लिए आतंक का पर्याय बनी दादी, नाती–पोतों के लिए ममता का सागर थीं। दो दिन की भी छुट्टी होती तो वे लोग गाँव की ओर भागते, हर फसल का आनंद उठाते। मकई के भुट्टे और ज्वार की बालियाँ सेंककर खाने का अलग ही आनंद था। खेतों में हरी मटर और हरे चने तोड़ते थे तो निराला ही स्वाद देते थे। पेड़ों से पक्के आम और अमरूद खाने से ज्यादा तोड़ने में मजा आता था। खुली–खुली हवा में घूमना, नदी में डुबकियाँ लगाना, कुएँ से डोल भर–भरकर नहाना, पेड़ों पर बंदरों की तरह उछल–कूद करना– उनका पूरा बचपन इनहीं स्मृतियों से भरा पड़ा है।4"

मालती जोशी की कहानियों में महानगरीय परिवार

महानगरीय परिवार वाले ग्रामीन परिवार वालों से वैकल्पिक जीवन बिताते हैं। लोग काम के पीछे भाग–दौड़ करते हुए अपने जिम्मेदारियों को भूल जाते हैं। यहाँ के लोग किसी धार्मिक अनुष्ठानों और संप्रदायों या संस्कृतियों को पालन नहीं कर पाते हैं। परिवार के रिश्तेदार आपस में आदान–प्रदान नहीं होने के कारण मोहभंग जीवन बिता रहे हैं। इनके जीवन में सही मार्गदर्शक नहीं होने के कारण तलाक जैसे मामले फिलहाल अधिक हो रहा है। परिवार के सदस्यों को एक–दूसरे पर

परवाह नहीं होता है। आपस में किसी भी बातों को साँझा नहीं करते हुए अपने–अपने काम में या माबइल में व्यस्त रहते हैं। इस परिवार में व्यक्तिगत मूल्य की घटियापन और नैतिक मूल्यों का अभाव भी पाया जाता है। इसका उल्लेख मालती जोशी की 'ऑनर किलिंग' कहानी में अनुषका का विवाह प्रशांत के साथ हुआ। तत्पश्चात दोनों विदेश निकलते हैं। तब फ्लैट में दोनों जाते वक्त प्रशांत ने अनुषका को एक औरत का परिचय दिया कि "ये ग्लोरिया है। पिछले तीन साल से हम लोग साथ रह रहे हैं।5" इसमें लेखिका महानगरीय 'लिविंग टुगदर' जीवन शैली को व्यक्त किया है।

निष्कर्ष

परिवार एक संस्था है जैसे एक संस्था अपने कर्मचारियों का कर्तव्यनिष्ठा व्यवहार के द्वारा उन्नति पाते हैं उसी तरह पारिवारिक सदस्य मिल–जुल कर अपने–अपने कर्तव्य निभाते हैं तो परिवार में उन्नति और नैतिक मूल्य संभव हो जाता है। परिवार के सदस्यों के बीच स्नेहभाव, जम्मेदारियों को निभाना, काम में सहयोग देना, सुख–दुख को आपस में सांझा करना, खुलापन आदि रहें तो पारिवारिक जीवन सफल बन जाता है। ये सभी तत्वों का उल्लेख मालती जोशी की कहानियों द्वारा व्यक्त किया गया है।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. डॉ. भारती शेळके, साठोत्तरी सेखिकाओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर प्र.स–2018, पृ.स–19
2. जोशी मालती, महकते रिश्ते, महकते रिश्ते, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं–2018 पृ.सं–24
3. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, प्रलय के बावजूद, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्सी, प्र.सं–2022 पृ.सं–41
4. जोशी मालती, वो तेरा घर ये मेरा घर, साँझ की बेला पँछी अकेला, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं–2022 पृ.सं–22
5. जोशी मालती, ऑनर किलिंग, ऑनर किलिंग, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं–2019 पृ.सं–43